

**मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि,
शिक्षक प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन**

बिष्णु दत्त

शोधार्थी

वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला

डा० ऋतु भारद्वाज

शोध निर्देशिका

वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला

शोध सार

शिक्षा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के साथ-साथ सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के लिए भी आवश्यक है, 'सुभषित रत्न दोष' में उल्लिखित है कि "ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो उसको समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करना है तथा यही कार्य करने की विधि बताता है।" लॉक ने ठीक ही कहा है— 'पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्यों का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है।' इसी प्रकार ड्यूबी ने इस तथ्य पर जोर देते हुए लिखा है— "जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का।" शिक्षा ही संस्कृति तथा सभ्यता की मूल और जननी है। शिक्षक ज्ञान रूपी प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शक है। शिक्षक द्वारा हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है तथा विश्व को समझने की क्षमता प्राप्त होती है। विद्यालय एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। विद्यालय वातावरण श्रेष्ठ होगा तो उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा उत्तम होगी और बालक में अच्छे गुणों, कौशलों व आदतों का विकास होगा।

समस्या कथन :

"मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बी.टी.सी. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, शिक्षक प्रभावशीलता एवं उनके समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

शिक्षा की प्रक्रिया में तीन आयाम मुख्य रूप से शामिल होते हैं। बालक, शिक्षक और पाठ्यक्रम। शिक्षक ही वह कड़ी है जिसकी सहायता से पाठ्यक्रम की सार्थकता प्रतीत होती है। शिक्षक ही एक ऐसा मानवीय साधन है जो ऐसे समाज की रचना तथा ऐसे चरित्रों का विकास करता है। जिससे राष्ट्र का उत्तरोत्तर विकास होता है। आज हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में निवास कर रहे हैं। फिर भी ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा का कोई भी अंग उसके शिक्षकों से ऊपर नहीं उठ सकता है। आज हम कितने भी उत्तम भवन, प्रयोगशालाएं, कुशल प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी तथा समाज की आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम की व्यवस्था करें। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति उदासीन होते हैं तो यह सभी सुविधायें बेकार रह जायेंगी। अतः शिक्षा का संपूर्ण तन्त्र शिक्षकों से प्रभावित होता है।

शोध उद्देश्य

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना ।
2. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।
3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।
2. “मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।
3. “मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।

सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली विधि

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन है जो शोध से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित है। इसमें अनुसंधान से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र व पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों आदि को सम्मिलित किया जा सकता है जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, रूपरेखा तैयार करने एवं शोध के आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

शोध समस्या की प्रकृति तथा प्रस्तावित उद्देश्यों के स्वरूप को देखते हुए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा शोधकर्ता को, जिस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचित कराती है।

जनसंख्या :

प्रस्तावित शोध के सर्वेक्षण हेतु मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० पुरुष एवं महिला शिक्षक को सम्मिलित किया है।

न्यादर्श :

न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग के मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को लिया है। न्यादर्शित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी०टी०सी० शिक्षकों में से शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्श विधि द्वारा 200 प्रयोज्यों का चयन किया है।

प्रस्तावित अध्ययन में 2 स्वतंत्र चर है ।

1. बी०टी०सी० पुरुष शिक्षक
2. बी०टी०सी० महिला शिक्षक

अध्ययन में 3 आश्रित चर है ।

1. कार्य सन्तुष्टि, 2. प्रभावशीलता 3. समायोजन

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है

1. डॉ० मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित – कार्य सन्तुष्टि मापनी (प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों के लिये)
2. डॉ० प्रमोद कुमार तथा डॉ० डी०एन० मूथा द्वारा निर्मित – अध्यापक प्रभावशीलता मापनी
3. डॉ० एस०के० मंगल द्वारा निर्मित – मंगल अध्यापक समायोजन परिसूची (लघुरूप)

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

प्रस्तावित अध्ययन में शोधार्थी ने मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

शोध प्रक्रिया निम्न चरणों के अन्तर्गत पूर्ण की गयी है—

1. परीक्षणों का प्रशासन
2. समंको का एकत्रीकरण
3. समंको की गणना

शोध अध्ययन का सीमांकन :-

1. प्रस्तावित अध्ययन उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद तक सीमित है।
2. अध्ययन में प्राथमिक स्तर के बी०टी०सी० पुरुष तथा महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3. अध्ययन में उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. यह विद्यालय ग्रामीण एवं नगर क्षेत्रों से सम्बन्धित है।
5. प्रस्तावित अध्ययन में क्षेत्र समूहों में महिला व पुरुष शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन 200 शिक्षकों तक ही सीमित है।

आंकड़ों का विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोध में संकलित किये गये आंकड़ों के आधार पर सभी परिकल्पनाओं के परिक्षण हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जायेगा— मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक अनुपात मूल्य। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर :-

1. मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।
2. तालिका संख्या 1 में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात प्रदर्शित किया गया है।

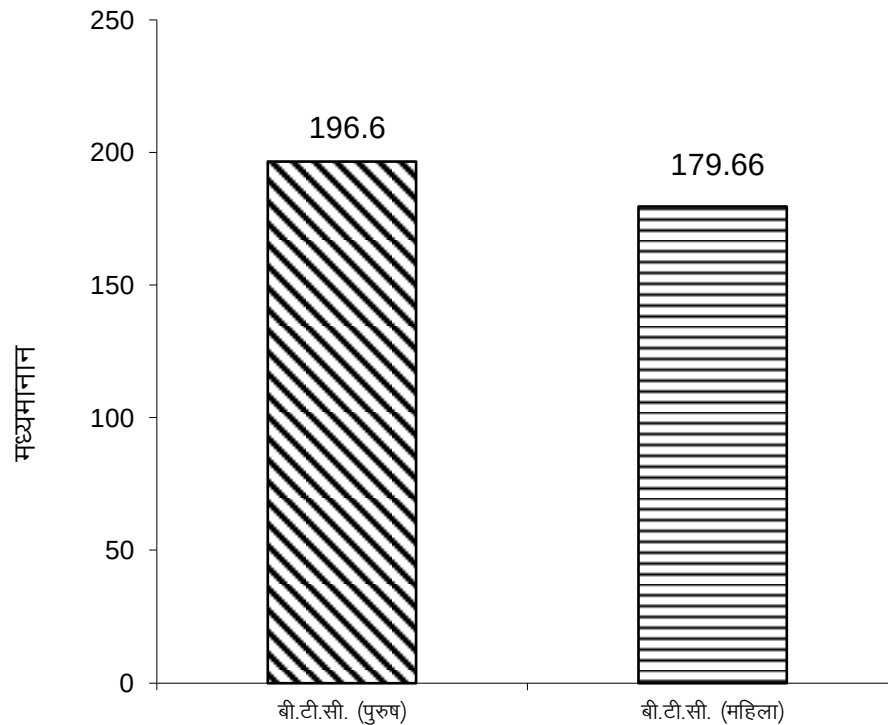
तालिका संख्या 1

आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
कार्य सन्तुष्टि	बी०टी०सी० पुरुष शिक्षक	100	196.60	14.79	1.767	9.586
	बी०टी०सी० महिला शिक्षक	100	179.66	9.67		

3. तालिका के अनुसार बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 196.6 व महिला शिक्षकों का मध्यमान 179.66 प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों में महिलाओं की अपेक्षा अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्टि होती है। दोनों समूहों का कार्य सन्तुष्टि के प्रति पुरुष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 196.6, 14.79 तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 179.66, 9.67 व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 9.586 है। जोकि दोनों स्तरों (0.05 व 0.01) पर सार्थक है।

4. अतः कार्य संतुष्टि के प्रति बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों व बी०टी०सी० महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अन्तर पाया गया।

लेखाचित्र संख्या 1



बी०टी०सी० (पुरुष) व बी०टी०सी० (महिला) शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्यमान का लेखाचित्र

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता में अन्तर : परिकल्पना क्रमांक : 2

“मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।

तालिका संख्या 2 में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का शिक्षक प्रभावशीलता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2

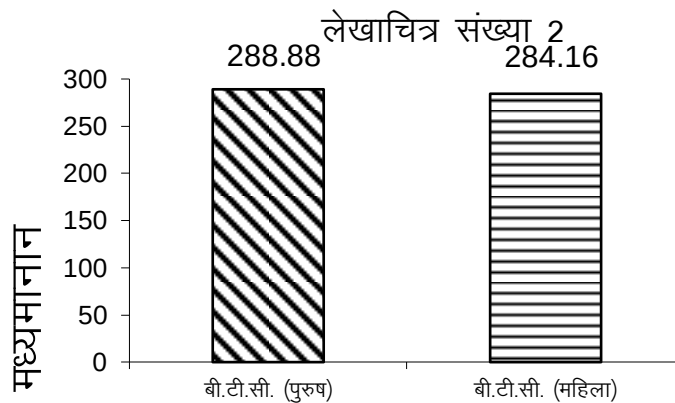
आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
शिक्षक प्रभाव शीलता	बी०टी०सी० पुरुष शिक्षक	100	288.88	19.920	2.606	1.811
	बी०टी०सी० महिला शिक्षक	100	284.16	16.802		

बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति मध्यमान 288.88 व बी०टी०सी० महिला शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति मध्यमान 284.16 प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षकों में महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक शिक्षक प्रभावशीलता पायी जाती है।

दोनों समूहों में शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 288.88, 19.920 तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन 284.16, 16.802 प्राप्त

हुआ है व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 1.811 प्राप्त हुआ है जोकि दोनों ही स्तरों (0.05 व 0.01) पर सार्थक नहीं है।

अतः शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों व बी०टी०सी० महिला शिक्षकों में अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् दोनों की कार्य संतुष्टि लगभग समान है।



शिक्षक प्रभावशीलता
बी०टी०सी० (पुरुष) व बी०टी०सी० (महिला) शिक्षकों की

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में अन्तरः

परिकल्पना क्रमांक : 3

“मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है”।

तालिका संख्या 3 के द्वारा सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 3

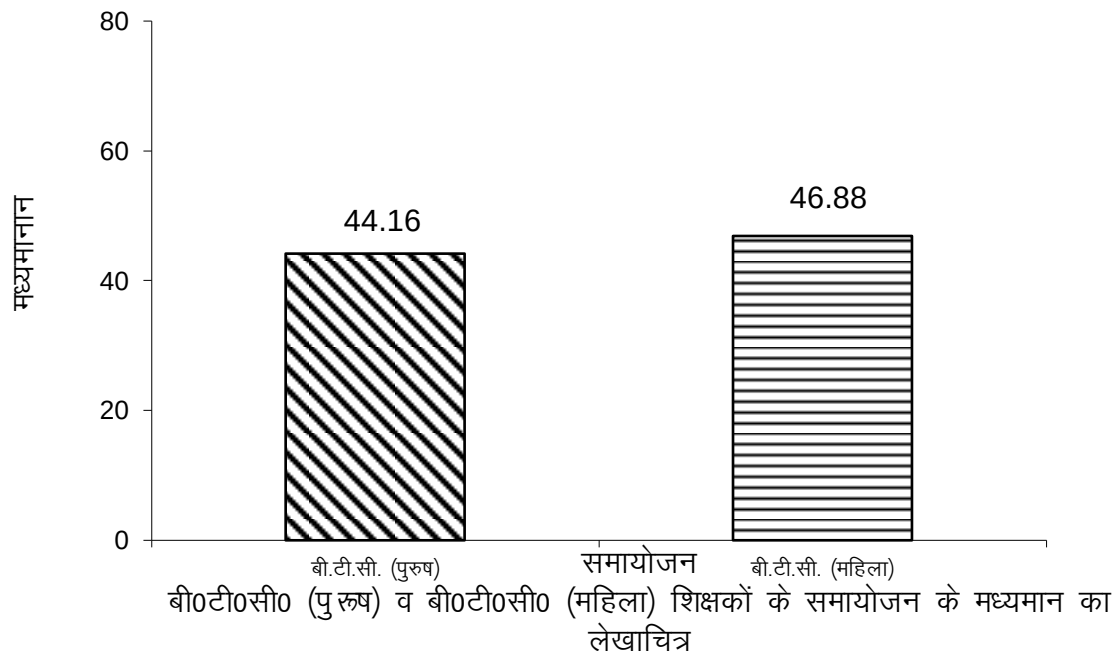
आश्रित चर (D.V)	समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (σ_d)	क्रान्तिक अनुपात मूल्य (C.R.)
समायोजन	बी०टी०सी० पुरुष शिक्षक	100	44.16	7.665	1.166	2.332 **
	बी०टी०सी० महिला शिक्षक	100	46.88	8.790		

** 0.05 स्तर पर सार्थक

बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 44.16 व बी०टी०सी० महिला शिक्षकों के मध्यमान 46.88 है इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों में महिलाओं की अपेक्षा समायोजन क्षमता अधिक होती है। दोनों समूहों में समायोजन के प्रति मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः बी०टी०सी० पुरुष शिक्षक 44.16, 7.665 बी०टी०सी० महिला शिक्षक 46.88, 8.790 व इन दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मूल्य 2.332 प्राप्त हुआ है। जोकि 0.05 स्तर पर सार्थक है।

अतः समायोजन के प्रति बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों व बी०टी०सी० महिला शिक्षकों में अन्तर पाया गया है।

लेखाचित्र संख्या 3



शोध के निष्कर्ष :-

1. मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों एवं बी०टी०सी० महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया है।
2. मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों एवं बी०टी०सी० महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
3. मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के बी०टी०सी० पुरुष शिक्षकों एवं बी०टी०सी० महिला शिक्षकों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है।

भावी शोध हेतु सुझाव

शोध कार्य को पूर्ण करने के उपरान्त शोधार्थी के मन में कुछ नवीन प्रश्न आये जो भावी शोध हेतु उपयोगी है। अर्थ एवं समय के दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी ने इस तथ्य का पूर्ण ज्ञान करके जिस समस्या का अध्ययन करने का प्रयास किया है वह तो एक सीमा तक पूर्ण रहा लेकिन शोध जैसे वृहद कार्य को पूर्ण करते समय कुछ अंश अछूते रहे जाते हैं। जिसका मुख्य कारण अर्थ, समय साधन, शारीरिक श्रम आदि है, प्रस्तुत अध्ययन की सीमा को ध्यान में रखते हुए निम्न नवीन शोध कार्य किये जा सकते हैं :-

1. प्रस्तुत शोध मुरादाबाद जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी०टी०सी० शिक्षकों पर किया गया है। इसे अन्य जनपदों एवं सभांगीय क्षेत्रों के बी०टी०सी० शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध में बी0टी0सी0 शिक्षकों के समान शिक्षामित्रों का भी चयन किया जा सकता है क्योंकि वे भी प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाते हैं।
3. न्यादर्श का आकार कम व अधिक भी कर सकते हैं।
4. प्रस्तुत अध्ययन में बी0टी0सी0, शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसी न्यादर्श पर अन्य चरों यथा— व्यक्तित्व, व्यवसायिक दबाव, शिक्षण अभिवृत्ति, अभियोग्यता, रुचि, मूल्य, मानसिक स्वास्थ्य, सृजनशीलता, आत्म प्रत्यय, चिंतनशैली आदि को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों पर भी इन चरों का अध्ययन किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध के चरों का हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. प्रस्तुत शोध कार्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित रहा है इन्हीं चरों को लेकर, राजकीय, निजी, कान्वेन्ट, सरस्वती शिशु मन्दिर, नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों में भी तुलना की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारस्वत, मालती : 'शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा', आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद 2000
2. ट्रेवर्स, राबर्ट एम0 डब्ल्यू : 'एन इंट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क, मेकमिलन कम्पनी, 1964, पृ0 283
3. विलियम्स, जे0 : 'जॉब सैटिसफैक्शन एंड आर्गनाइजेशनल कमिटमेंट ए स्लोन वर्क एंड फैमिली, इन्साइक्लोपीडिया एन्ट्री, 2004
4. यंग, पी0वी0 : 'साइन्टीफिक एंड सोशल रिसर्च', एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1960
5. ग्रेवाल, एस0के0 : 'जॉब स्ट्रेस, जॉब सैटिसफैक्शन, एडजस्टमेंट एण्ड इन्ट्रेस्ट ऑफ टीचर ऐजुकेटर एज रिलेटिव टू देअर जॉब प्लेसमेंट', पी-एच0डी0 (एजू0), पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ 2004
6. गुप्ता, बी0डी0 : 'इन्टेलीजेन्स एडजस्टमेंट एण्ड पर्सनेलिटी नीड्स ऑफ इफैक्टिव टीचर्स इन साइन्स एण्ड आर्ट्स', पी-एच0डी0 (एजुकेशन), आगरा यूनि0, 1988
7. मंगल, एस0के0 : 'एनालिसिस ऑफ कॉमन फैक्टर इन टीचर एडजस्टमेंट', पी-एच0डी0 (एजू0) कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, 1979
8. इन्दौरिया, नर्बदा : 'शिक्षकों की प्रभावशीलता, समायोजन एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन', लघु शोध प्रबन्ध एम0डी0एस0 विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) 1983
9. जायसवाल, रश्मि व अग्रवाल सरस्वती : 'सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य वर्ष 10, अंक 3, वि0स0 2003
10. काशीनाथ, एच0एम0 : 'एडजस्टमेंट कम्पोनेन्ट्स ऑफ दि स्टूडेन्ट स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय-ए क्लस्टर एनालाइसिस' जनरल ऑफ कम्प्यूनिटी गाइडेन्स एंड रिसर्च, वॉ0 20(3), 295-304, इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट, वॉ0 5(1 व 2), जनवरी व जुलाई 2003.
11. कुहन, बी0जे0 : 'टीचर पर्सनेल्टी टाईप एण्ड जॉब सैटिसफैक्शन' डिजरेशन एब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल, वॉ0 43(1), पृ0 104 A पृ0 1982